

संथाल जनजाति की विशिष्ट संस्कृति एवं लोकजीवन के विविध रूप

नंदन चन्द्र पानी

शोधार्थी, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442001

kumarnandan668@gmail.com

डॉ. हरीश पाण्डेय

सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442001

harishjobvns@gmail.com

Paper Received On: 20 NOV 2024

Peer Reviewed On: 24 DEC 2024

Published On: 01 JAN 2025

Abstract

संथाल जनजाति झारखण्ड समेत भारतीय लोकजीवन का एक विशिष्ट अंग है। ये जनजाति आज आधुनिक समय में भी अपनी पारंपरिक सांस्कृतिक विरासत एवं जातीय धरोहर की संरक्षा करते हुए आदिवासी जीवनदृष्टि व जीवनानुभवों को पीढ़ियों से संगृहीत करते आ रहे हैं। संथाल जनजाति की संस्कृति उनकी पहचान और अस्तित्व की विरासत को प्रस्तुत करती है। ये संस्कृति इनके भौगोलिक, प्रजातीय एवं भाषाई विशेषताओं के माध्यम से अपनी पहचान बनाती है और जीवंत रहती है जो कालांतर में अर्थव्यवस्था, सामाजिक विकास के साधनों, धार्मिक रीतियों तथा विशिष्ट नियमों एवं प्रतीकों के पारंपरिक मान्यताओं द्वारा सांस्कृतिक परिधि (जनजातीय अभिमूल्यों) का निर्माण करती है। संथाल संस्कृति अन्य जनजातीय संस्कृतियों से साम्यता रखते हुए भी अपने विशिष्ट प्रजातीय गुणों एवं लोकजीवन के लिए जानी जाती है जिसमें उनका रहन-सहन, वेश-भूषा, गोत्र-व्यवहार, मान्यताएं, भोजन पद्धति, प्राकृतिक संसर्ग, गोदना, आभूषण, आर्थिक, धार्मिक एवं सामाजिक जीवन, पर्व-त्यौहार तथा रीति-रिवाज आदि सभी सांस्कृतिक अभिमूल्यों के सजीव अंग हैं। यह शोध पत्र भारतीय संस्कृति के वाहक समुदाय 'संथाल' के सांस्कृतिक वैशिष्ट्य, उनकी दृढ़ मान्यताओं, आचरण पद्धतियों, ज्ञानात्मक प्रक्रियाओं तथा धार्मिक विश्वासों व सांस्कृतिक प्रतिरूपों की पारंपरिक एवं रूढ़ रीतियों की विवेचना प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में संथाल जनजाति के सांस्कृतिक आयामों के अन्वेषण की दृष्टि से शोधकर्ता द्वारा अध्ययन क्षेत्र भूरा के संथाल जनजाति के सांस्कृतिक स्वरूप जिसमें उनकी जीवन पद्धति, पारंपरिक बसाहट, भाषा-बोली, जीवन संस्कार, मान्यताएं, आर्थिक संरचना, धार्मिक रीतियां, पर्व-त्यौहार तथा संस्कृतिकरण आदि की विवेचन प्रस्तुत की गई है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने छः आयामों पर आधारित अर्थसंरचित साक्षात्कार अनुसूची द्वारा प्रदत्त संकलन तथा शोध प्रविधि के रूप में यथार्थवादी नृजातीय उपागम का उपयोग किया है। जिसके अंतर्गत भूरा ग्राम के 12 परिवारों/सदस्यों को शामिल किया गया है जो कि भूरा ग्राम के चार टोलों (क्षेत्र) से सम्बंधित थे। प्रस्तुत शोध पत्र संथाल जनजाति की भौतिक एवं अभौतिक संस्कृति को ज्ञात करने, उनके अंतःसंबंधों के सूक्ष्म ताने-बाने को समझने तथा वर्तमान समय में संथालों में निर्मित सांस्कृतिक मूल्यों को आधुनिक कैनवास के सापेक्ष देखने व सांस्कृतिक समाजीकरण के प्रतिरूपों को जानने में यह शोध पत्र विषद विवेचना प्रस्तावित करती है।

मुख्य बिंदु: संथाल जनजाति, सांस्कृतिक प्रतिरूप, संथाली लोकजीवन, भौतिक एवं अभौतिक संस्कृति, सांस्कृतिक समाजीकरण

अध्ययन की पृष्ठभूमि :

संस्कृति हमारे समाज द्वारा विनिर्मित एवं संरक्षित वह मानक समुच्च है जिससे समाजीकृत सामाजिक गुणों का हस्तान्तरण व्यक्तियों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी होता रहता है। ये सांस्कृतिक मूल्य हमें सामाजिक विरासतों (ज्ञान-विज्ञान, कला, विश्वास व प्रथाएं), व्यवहार प्रतिमानों (लोकाचार, लोकरीतियां, परिपाटियां तथा नियम विधान), ज्ञात अस्तित्वबोध (स्त्री, पुरुष एवं थर्डजेन्डर), अधिव्यक्तिक संचयी गुणों (जैविकीय गुण) तथा पर्यावरणीय सामायोजन व समावेशन आदि उपकरणों (आयामों) द्वारा प्राप्त होता है। संस्कृति के निर्माण, संरक्षण व हस्तांतरण के लिए परम

आवश्यक तत्व है समाज, जिसके बिना मनुष्य का अस्तित्व पूर्ण नहीं हो सकता है। अतः सांस्कृतिक संरचना का केन्द्रीय तत्व समाज है जिसकी सबसे छोटी इकाई मनुष्य है। एकल उद्देश्यों से युक्त मनुष्यों के समुच्चय से बने समाज का अध्ययन ही संस्कृति का अध्ययन है। उद्देश्यों के आधार पर भारत व विश्व में विभिन्न प्रकार के समाज हैं। जिनकी अपनी संस्कृति, भाषा, मान्यताएं एवं भौगोलिक विशिष्टताएं हैं, जो समेकित रूप से भारतीय व विश्व संस्कृति का निर्माण करते हैं। इन्हीं सांस्कृतिक समूहों में से एक संधाल समुदाय हैं जिनकी अपनी विशिष्ट मान्यताएं, विश्वास, लोकाचार, धार्मिक एवं सामाजिक परंपराएं हैं जो इनके जीवन सत्य को परिभाषित और प्रकाशित करते हैं।

संधाल भारत की एक प्रमुख एवं झारखण्ड राज्य की सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति है जो अपनी कला, सांस्कृति एवं भाषाई विशिष्टताओं के साथ गांवों में रहने वाली शांतिप्रिय कृषक जनजाति है। संधाल जनजाति अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक लोकजीवन एवं पारंपरिकता के लिए जाने जाते हैं। ये सांस्कृतिक अभिमूल्य, इनके रहन-सहन, बोली-भाषा, गीत-त्यौहार, मान्यताओं, अस्तित्वबोध, ज्ञानात्मक पद्धतियों एवं सामुदायिक क्रियाकलापों की परम्परागत दृष्टि द्वारा विरचित हैं। संधाल अपनी अपनी जीणिविषा, कार्यकुशलता एवं निर्माणधर्मिता की प्रवृत्ति द्वारा प्रकृतिक वातावरण से अनुकूलन स्थापित कर अपनी दैनिक आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति हेतु विविध कलाओं एवं पद्धतियों यथा- कृषि के तरीके, मजदूरी औजार, दोना-प्लेट, रस्सी की टोकरी, सिक झाड़ू, विभिन्न वाद्ययंत्र, तीर-धनुष आदि के निर्माण के साथ-साथ प्राकृतिक स्वरूप जैसे; जंगलो के नाम, झरना, नदी, पहाड़ तथा वन पशु-पक्षियों से जुड़े पापरिक गीत जो उनके पारंपरिक मान्यताओं के संदर्भ सूचक हैं आदि के उपासक खोजकर्ता के रूप में प्रतिस्थापित हैं। इन्ही संधाली सांस्कृतिक अभिमूल्यों, मान्यताओं एवं व्यवहार पद्धतियों एवं विश्वासों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरण की सामाजिक प्रक्रिया को सांस्कृतिक समाजीकरण कहा जाता है जिसमें कोई समुदाय अपने भौतिक एवं अभौतिक दोनों ही संस्कृतियों को विविध पद्धतियों से ने अपने सामाजिक संस्थाओं द्वारा संपूर्ण समाज में प्रशासित कर नवआगत सदस्यों को प्रशिक्षित कर संस्कारित करता है।

संस्कृतिकरण (सांस्कृतिक समाजीकरण) से अभिप्राय एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया से है जिसमें समाज में प्रचलित वे श्रेष्ठ मान्यताएं, जीवनकौशल व जीवन मूल्य जिसे ग्रहण कर व्यक्ति अपनी प्रस्थिति में परिवर्तन द्वारा सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। संधाल जनजाति में संस्कृतिकरण की प्रक्रिया उसके लोकजीवन का हिस्सा है जिसमें उनके प्रमुख सामाजिक संस्थाएं एवं उनके क्रियाकलाप अपनी नई पीढ़ी को श्रेष्ठ मान्यताएं, जीवनशैली तथा जीवन मूल्य प्रदान करने हैं इन संस्थाओं में प्रथम संस्थान है परिवार जहाँ बच्चे का प्रारंभिक समाजीकरण माता-पिता, संबंधियों तथा आस पड़ोस के वातावरण से अनुकूलन द्वारा होता है फिर समाज के कई अन्य संस्थाएं जैसे- विद्यालय, राजनैतिक संगठन, धार्मिक गतिविधियां, भाषाई विविधता, अन्य संस्कृतिक संपर्क, संचार आदि द्वारा समाजीकृत होता है इन्हीं संदर्भों से संदर्भित कई शोध कार्य किये गए हैं यथा- पाण्डेय (2002), ज्योत्सना (2005), कुमारी (2016), अरापन (2020), पुनिता (2011), शर्मा (2012) आदि अध्ययनों में संधाल जनजाति की संस्कृति, भाषा व्यवहार, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक संदर्भों के साथ-साथ इनके भौगोलिक एवं नृवंशीय अध्ययन द्वारा संधाल जनजाति के समस्त संदर्भों को विश्लेषित किया गया है।

संधाल जनजाति की परंपरागत जीवनशैली, उनकी ज्ञानात्मक पद्धति, उनके पारिवारिक उद्यमी कौशल आदि उनके जीवन संस्कार एवं सामुदायिक संस्कृति का परिचायक हैं जो विशिष्ट रूप से भारतीय संस्कृति का द्योतक हैं। उक्त अध्ययन संधाल जनजाति के सांस्कृतिक स्वरूप के दोनों आधारों (भौतिक एवं अभौतिक) के समस्त आयामों को समझने तथा संधाली लोकजीवन व संस्कृतिकरण के साधनों की गहन पड़ताल की अंतरदृष्टि विकसित करने हेतु महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध भारतीय संस्कृति के वाहक समुदाय संधाल के प्रति समाज का ध्यान आकृष्ट करने तथा इनके सांस्कृतिक स्वरूप को जानने के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।

उद्देश्य :

1. संधाल जनजाति के सांस्कृतिक स्वरूप का अध्ययन करना।
2. संधाल जनजाति के लोकजीवन एवं सांस्कृतिक समाजीकरण का अध्ययन करना।

प्रविधि :

प्रस्तुत शोध नृजातीय अध्ययन पद्धति के नेचुरलिस्टिक इंकायरी (यथार्थवादी नृजाति विधि) पर आधारित हैं। शोधकर्ता द्वारा विस्तृत अध्ययन हेतु झारखण्ड राज्य के धनबाद जिले के केलियासोल प्रखंड के पिराहाट ग्रामपंचायत के भुरसा गांव के समस्त संधाल जनजाति को जनसंख्या के रूप में लिया गया है। शोध में न्यादर्श के चयन हेतु सोदेश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया है जिसमें भुरसा गांव के चारों टोलों के 12 संधाली परिवारों/सदस्यों से तीनों पीढ़ी के प्रतिनिधि सदस्यों (पुत्र/पुत्री {18-30}, पिता {31-50} और दादा {51 से ऊपर}) को लिया गया है। इस अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा विभिन्न पक्षों व प्रश्नों के गहनतम अन्वेषण हेतु स्वनिर्मित अर्थसंरचित साक्षात्कार अनुसूची तथा अवलोकन अनुसूची का निर्माण किया गया है। प्रदत्तों के संकलन हेतु नेचुरलिस्टिक इंकायरी तकनीकी का समुचित उपयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में संकलित समंको की प्रकृति के आधार पर माइल्स एण्ड हैबरमान तकनीकी का प्रयोग प्रदत्त विश्लेषण प्रविधि के रूप में किया गया है।

उद्देश्य आधारित प्रदत्त संकलन प्रविधि:

तालिका-1: उद्देश्यवार प्रयुक्त तकनीकी एवं उपकरण

क्रं. सं.	उद्देश्य	तकनीकी एवं उपकरण
1.	संधाल जनजाति के सांस्कृतिक स्वरूप का अध्ययन करना।	सहभागी एवं असहभागी अवलोकन, साक्षात्कार
2.	संधाल जनजाति के लोक जीवन एवं सांस्कृतिक समाजीकरण का अध्ययन करना।	सहभागी अवलोकन, साक्षात्कार

तालिका में प्रस्तुत प्रथम उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शोधार्थी द्वारा प्रदत्त संकलन हेतु अवलोकन एवं साक्षात्कार तकनीकी का प्रयोग किया गया जिसके अंतर्गत शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र भुरसा के प्राथमिक रूप से भ्रमण के पश्चात गहनतम जानकारीयों के एकत्रिकरण हेतु स्वनिर्मित अवलोकन अनुसूची तथा स्वनिर्मित अर्थसंरचित साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया तथा सहभागी एवं असहभागी दोनों रूप से अवलोकन कर आवश्यक आकड़ों का एकत्रिकरण किया गया। द्वितीय उद्देश्य की प्राप्ति हेतु शोधकर्ता द्वारा सहभागी अवलोकन एवं साक्षात्कार तकनीक का प्रयोग किया गया जिसमें शोधार्थी द्वारा परिवेश से साहचर्य स्थापित करने व उन्हें जानने के पश्चात आवश्यक जानकारीयों को प्राप्त करने हेतु स्वनिर्मित अवलोकन अनुसूची एवं स्वनिर्मित अर्थसंरचित साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया जिससे अध्ययन क्षेत्र के परिवेश में सहभागी अवलोकन द्वारा सूक्ष्म एवं आवश्यक आकड़ों को प्राप्त किया गया।

थीम निरूपण:

उद्देश्य आधारित थीम का निर्माण निम्न रूप में किया गया है-

तालिका-2 : थीम एवं संकेतक

क्र. सं.	आयाम	कोड (संकेतक)
1.	पारंपरिक बसाहट	गाँव, प्राकृतिक संसर्ग, निवास स्थान, गृह संरचना
2.	जीवन संस्कार	जन्म संस्कार, विवाह संस्कार, मृत्यु संस्कार, नातेदार, गोत्र व्यवहार
3.	पारंपरिक प्रथाएँ एवं पर्व-त्योहार	पर्व-त्योहार, रीति-रिवाज, मान्यताएं, धार्मिक गतिविधियाँ, गीत, नृत्य, वाद्ययंत्र, गोदना
4.	लोक जीवन / सामाजिक जीवन	दिनचर्या, स्थानिक मान्यता, सामाजिक दायित्व, समन्वय, सामुदायिक भागीदारी
5.	सांस्कृतिक समाजीकरण	ज्ञान, कौशल, विद्या, मूल्य, सामाजिक संस्थाएं, भूमिका निर्धारण
6.	भाषा/ बोली	गृहभाषा, व्यावहारिक भाषा, भाषाई समझ

तालिका 2 में शोध उद्देश्यों के आधार पर छः अनुभाग यथा- पारंपरिक बसाहट, जीवन संस्कार, पारंपरिक प्रथाएं एवं पर्व-त्योहार, बोली-भाषा, लोकजीवन एवं सांस्कृतिक समाजीकरण (सांस्कृतिकरण) आदि थीम को विभिन्न कोड (संकेतक) में विभक्त किया गया है। इन कोड के आधार पर उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति के लिए शोधार्थी द्वारा प्रदत्त संकलन की क्रियाविधि का सम्पादन किया गया है।

आयाम आधारित प्रदर्शन एवं विश्लेषण :

तालिका-3 : साक्षात्कारदाता का विवरण

क्र. सं.	नाम (काल्पनिक)	लिंग	आयु	ग्राम स्थिति (स्थान)	शिक्षा	व्यवसाय	पारिवारिक स्वरूप	भाषाई बोध	अन्य
1.	सुनीता हेम्ब्रम	स्त्री	24	T-1	MA, B.Ed	विद्यार्थी	संयुक्त	हिंदी, संथाली, बांग्ला	अंग्रेजी, खोरठा,
2.	हरेन मुर्मू	स्त्री	51	T-3	साक्षर	मजदूरी	संयुक्त	संथाली, हिंदी	
3.	कैथरीन टुडू	स्त्री	56	T-4	अशिक्षित	सब्जी व्यापारी	संयुक्त	संथाली, बांग्ला	हिंदी,
4.	अर्जुन बेसरा	पुरुष	36	T-2	12 th पास	कृषि व मजदूर	एकल	संथाली, बांग्ला, सादरी	हिंदी,
5.	राकेश मुर्मू	पुरुष	39	T-3	BA, B.Ed	अध्यापक	एकल	संथाली, हिंदी, बांग्ला,	अंग्रेजी,
6.	जागु मरांडी	पुरुष	29	T-1	BA	अध्यापक	संयुक्त	संथाली, हिंदी, खोरठा	अंग्रेजी, बांग्ला,
7.	रीना हंसदा	स्त्री	30	T-4	अशिक्षित	गृहणी	एकल	संथाली, बांग्ला	हिंदी,

8.	विनीता बास्के	स्त्री	46	T-2	अशिक्षित	व्यापारी	संयुक्त	संथाली, बांग्ला, खोरठा	हिंदी,
9.	बड़की बेसरा	स्त्री	41	T-4	कक्षा तक	कृषि व्यापारी	व संयुक्त	संथाली, बांग्ला,	हिंदी,
10	अगान मरांडी	पुरुष	50	T-1	अशिक्षित	कृषि व्यापारी	व संयुक्त	संथाली, सादरी, मांझी	हिंदी, खोरठा
11	मनोज किस्कू	पुरुष	32	T-3	10 वीं पास	नौकरी (गार्ड)	एकल	संथाली, खोरठा	हिंदी,
12	शिल्पा सोरेन	स्त्री	31	T-2	5 वीं पास	गृहनी मजदूर	व एकल	संथाली, बांग्ला, खोरठा	हिंदी,

प्रस्तुत तालिका में संथाल जनजाति के समस्त उत्तरदाताओं का जनसांख्यिकीय विवरण दिया गया है जिसमें उत्तरदाताओं के काल्पनिक नामों को संदर्भित किया गया है। इस सारणी में 12 उत्तरदाता, जिसमें 6 पुरुष एवं 6 महिलाएं हैं जिनमें 18 वर्ष से लेकर 70 वर्ष तक के लोग शामिल हैं। सारणी में लोगों का स्थानिक परिचय टोला के आधार पर दिया गया है जिसे मुख्यतः चार भागों T-1, T-2, T-3, T-4 में बांटा गया है। इस अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं में अधिकांश लोग कक्षा-पांच एवं उसके नीचे शिक्षित हैं जबकि इन्हीं में से कई उच्चशिक्षा प्राप्त भी हैं। व्यवसाय में भी अधिकांश कृषि, व्यापार एवं मजदूरी का काम करते हैं उन्हीं में से कुछ नौकरियां भी करते हैं। पारिवारिक संरचना के आधार पर अधिकांश लोग संयुक्त परिवारों से आते हैं वहीं कुछ लोग एकल परिवारों के सदस्य भी हैं। उक्त सभी लोगों का भाषाई बोध बहुभाषिक है जिसमें अशिक्षित एवं शिक्षित दोनों ही वर्ग में संथाली, हिंदी, बांग्ला तथा खोरठा का व्यवहार सामान्य है। इन सभी की गृहभाषा संथाली है इस, सारणी में महेश है जो गांव के मांझी (मुखिया) है।

आयाम आधारित प्राप्त आंकड़ों का प्रश्नानुसार प्रदर्शन एवं विश्लेषण :

आयाम 1: पारंपरिक बसाहट

(प्रश्न 1.1 और 2 : अपने गांव के विषय में आप क्या जानते हैं? निवास स्थान आपके लिए कितना महत्वपूर्ण है और क्यों?)

सुनीता हैम्ब्रम मानती हैं कि उनका गांव प्राकृतिक संसाधनों से युक्त है। जहां पलाश वन, पहाड़, नदी का स्रोत तथा तालाब आदि मौजूद है जिसका प्रयोग अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए करते हैं। अर्जुन बेसरा यह मानते हैं कि उनके गांव में जनसंख्या की दृष्टि से संसाधनों का अभाव है। स्कूल की व्यवस्था समुचित नहीं है, साथ ही गांव के अधिकांश लोग गरीब हैं जिनके पास संसाधनों का अभाव है जिससे उन्हें निश्चित जीवन जीने में कठिनाइयां होती हैं। मनोज किस्कू का करना था 'मैंने अपने बचपन से देखा है हम ऐसे ही घरों में रहते थे तथा हमारे घरों की संरचना भी पुराने लोगों (बुजुर्गों) के साथ हुई है जहां घर एवं परिवेश की रक्षा वे सदैव करते हैं हमारे घरों में उनका निवास है'। ज्यादातर लोग यह कहते हैं कि उनके गांव की बनावट बहुत पुरानी एवं परंपरागत है जैसे कि महेश ने कहा कि हमारा गांव कई पीढ़ियों से ऐसा ही है। हमारा पूरा गांव आज भी अपने पारंपरिक मान्यताओं के साथ घर बनता है और उसमें शुद्ध लिपाई, अल्पोना एवं काले रंग से साज करके अपने पूर्वजों एवं घर को सुरक्षित करते हैं। गांव में चबूतरा, माझीथान, जंगल तथा सार्वजनिक स्थान उपलब्ध हैं जो सभी का है जो परंपरा का रूप है। जिसे मैं गांव के लोगों के साथ सुरक्षित एवं व्यवस्थित करता हूँ।

रीना हांसदा मानती हैं कि घर एक संसाधन व संपत्ति है जो हमें सुरक्षित एवं संपन्न बनाती है जहां हम सबसे ज्यादा सुरक्षित महसूस करते हैं। बड़की बेसरा कहती हैं कि यह ऐसा स्थान है जिसके कई प्रकार के संबंधों का निर्माण होता है। अधिकांश लोग निवास स्थान को प्रकृति के सनिकट होने के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं तथा अपने

क्रियाकलाप के केंद्रीय स्थल के रूप में देखते हैं। वहीं हरेश मुर्मू का मानना है कि निवास स्थान हमें धार्मिक, सामाजिक एवं प्राकृतिक बनाता है वह अपने बचपन में अपने आंगन के पेड़ पर पलक झपकते ही चढ़ते-उतरते थे अपनी बाँड़ी में पूजा करते अपने पिता को बाद में स्वयं करते देखते तथा घर के कई रिश्तेदारों से भाषा व समाज के नियम भी सीखते थे उनके पिता लखन जी का कहना था कि बीते मनुष्य की सबसे बड़ी पूंजी है जो उसे पीछे से अगली पीढ़ी के लिए सुरक्षित करनी होती है।

आयाम 2 : जीवन संस्कार

(प्रश्न 2.1,2 और 3: आपके समुदाय में जन्म संस्कार की क्या मान्यताएं हैं? विवाह संस्कार के विषय में आपके क्या विचार हैं? मृत्यु संस्कार का क्या महत्व है, इसमें समुदाय की क्या भूमिका है?)

अगान मरांडी का मानना है कि जन्म शुभ का प्रतीक है। अतः परिवार में शिशु के जन्म से खुशियां मनाई जाती हैं। हरेश मुर्मू मानते हैं कि जन्म परिवार और समुदाय के लिए अच्छा संकेत है जन्म के द्वारा व्यक्तियों का पुनः आगम परिवार समुदाय में होता है इसलिए बच्चों का नाम दादा-दादी और नाना-नानी के नाम पर रखा जाता है। लगभग सभी लोग जन्म छठीयार को बहुत धूमधाम से मनाते हैं और सारे रिश्तेदारों को नेवता भेजा जाता है और मांझी की उपस्थिति में घाट की रीति पूरी करते हैं। हम चाचो छठीयार मनाते हैं जिसकी कोई निश्चित उम्र या दिन सुनिश्चित नहीं होते यह विवाह के पूर्व ही मनाया जाता है। जागु मरांडी का कहना है कि उसका चाचो छठीहार 21 साल की उम्र में मनाया जाता था जिसके बाद ही वह समुदाय का हिस्सा बनाया गया। उसके यहां जन्म की दो रीत है लड़के के जन्म के पांचवे दिन तथा लड़की के जन्म के तीसरे दिन जानम छठीहार मनाया जाता है जिसमें गांव के लोग रिश्तेदार सभी शामिल होते हैं।

विनीता बास्के के अनुसार हमारे यहां विवाह में गोत्र की भूमिका महत्वपूर्ण है उसके आधार पर ही मांझी की अनुमति द्वारा विवाह संपन्न होता है। शिल्पा सोरेन का मानना है कि गोत्र व्यवहार से समुदाय में निषेधात्मक कार्यों को करने से रोका जाता है यानी समगोत्रीय विवाह निषेध माना जाता है। उसका मानना है कि आज नियमों में काफी छूट है। विवाह में नियमों का उल्लंघन भी करता है तो बिटलाह की रीति में भी अधिक लचीलापन होने से समुदाय के नियमों में भी परिवर्तन हुआ है वहीं कुछ लोग विवाह के कई तरीकों जैसे सगाई बापला, गोलाइटी बापला, टनकी बापला, दीपिल बापला, घरदी जवाम बापला तथा इतुत बापला आदि जिसमें मांझी की भूमिका महत्वपूर्ण होती है और समाज के सभी लोगों की सहभागिता होती है। कैथरिन टुडू ने कहा है कि उसकी शादी गोलाईटी बापला की प्रथा से हुआ है जिसमें शादी के लिए कोई पोन नहीं दिया गया है क्योंकि उसके परिवार में एक पीढ़ी पहले लड़के के यहां से उसकी चाची की शादी हुई थी हमारे यहां आजकल इतुत बापला और टुनकी दीपिक बापला का अधिक प्रचलन है।

राकेश मुर्मू कहते हैं कि उनके यहां शव संस्कार तथा श्रद्धा रश्में पूर्व विधि द्वारा संपन्न होती है जिसमें गांव के मांझी रिश्तेदार तथा गोत्री आदि प्रमुख रूप से शामिल होते हैं। ज्यादातर लोगों का मानना है कि मृतक के साथ उसकी वस्तुएं भी जलाई जाए जिससे उसे मायामयी दुनिया में चीजों की कमी ना हो, वहीं कुछ लोग मानते हैं कि उनके परिजन इसी दुनिया में रहकर उनकी रक्षा करते हैं तथा घर पर ही रहते हैं और उनकी वस्तुओं को उनके लिए संभाल कर रखा जाता है।

आयाम 3 : पारंपरिक प्रथाएं एवं पर्व-त्यौहार

(प्रश्न 2.2.1 से 2 तक: आपके समुदाय में कौन-कौन से त्यौहार मनाए जाते हैं एवं उनका आपके जीवन में क्या महत्व है? आपके समुदाय में धार्मिक गतिविधियों में गीत, नृत्य एवं वाद्य यंत्र की क्या भूमिका है?)

संथाल लोगों का कहना है कि हमारे समुदाय में पर्व-त्यौहार का विशेष महत्व है और साल भर छोटे-बड़े कई त्यौहार एवं पर्व मनाए जाते हैं। समस्त संथाल समुदाय का हिस्सा बनना है। कुछ लोगों का कहना है कि त्यौहार हमारे यहां सामुदायिक एकता का प्रतीक है हम कृषि प्रकृति एवं अपने पूर्वजों के लिए विविध प्रकार के पर्व एवं त्यौहार को मनाते हैं। कुछ लोगों को उनके जीवन से अलग नहीं मानते वह कहते हैं कि पर्व और त्यौहार जीवन की खुशहाली एवं शांति समृद्धि का प्रतीक है साथ ही यह पर्व उनके भगवान एवं प्रकृति के आशीर्वाद स्वरूप मनाया जाता है। कुछ लोगों का कहना है कि हमारे यहां एरोल पर्व, हरियाल पर्व, जापाड़ पर्व आदि प्राकृतिक संसर्ग पर्व मनाए जाते

हैं वहीं कुछ लोग सोहराई पर्व, सकरात, बंधना पर्व तथा ग्राम पूजा दो 4 साल में एक बार आता है। इस संदर्भ में राजी कहती है कि उसके घर में बचपन से कई पर्व एवं त्योहार मनाए जाते हैं जिसमें से उसका वशिष्ठ पसंदीदा पर्व सोहराई तथा बंधना है जिसमें सभी रिश्तेदार शामिल होते हैं और एक साथ गाते नाचते और हडीया पीते हैं और इस दिन के लिए अपने भगवान एवं पितरों को धन्यवाद याद करते हैं।

अधिकांश लोगों का कहना है कि गीत एवं नृत्य देवी-देवता को खुश करने के लिए किया जाता है जिसके सहयोगी यंत्र के रूप में वाद्य यंत्रों का वादन किया जाता है। कुछ लोगों का मानना है कि धार्मिक गतिविधियां कुछ शुभ कार्य एवं कुछ निषेधात्मक नियमों द्वारा संपादित होती हैं इसमें प्रयुक्त वाद्य यंत्र पूजा स्थान में सुरक्षित रखे जाते हैं गांव के कुछ लोगों का मानना है कि धार्मिक गतिविधियां हमारे लिए अति महत्वपूर्ण है जिसमें हम बली द्वारा अपने देवी-देवताओं से आशीष मांगते हैं। कुछ लोग धार्मिक पर्व को जो आधारों पर देते हैं पहला पारिवारिक और दूसरा सामुदायिक/सामाजिक परिवार में पूजा करने का अधिकारी परिवार का बड़ा बेटा होता है जिसे जाता है वंश परंपरा द्वारा वही समुदाय समस्त समुदाय के सहयोग से एवं माझी अड़ाम द्वारा पूरा किया जाता है इसमें महिलाएं शामिल नहीं होती हैं। महेश का इस विषय में कहना है कि धर्म मनुष्य को शक्ति देता है जीवन जीने का भूरसा गांव में लगभग सभी लोग आस्तिक हैं और पूजा पाठ में विश्वास करते हैं वे कहते हैं कि हमारा धर्म संधाल धर्म है जिसमें सभी देवी देवता ग्रामदेवी एवं पितरों की पूजा की जाती है जिसके लिए हमारे पूर्वजों द्वारा गीतों की रचना की गई है और हम सभी विशेष रूप से महिलाएं इन गीतों को गाती हुई सामूहिक नृत्य करती है और पुरुष गीत गाते हुए वाद्य यंत्रों को बजाते और झूमते हैं।

आयाम 4 : लोकजीवन/सामाजिक जीवन

(प्रश्न 4.1,2,3 और 4 आपके गांव की स्थानिक मान्यताएं क्या हैं? सामुदायिक भागीदारी के विषय में आप क्या सोचते हैं? आपका पारिवारिक स्वरूप कैसा है? इसमें नातेदारों की क्या भूमिका है? आपके दैनिक गतिविधियां एवं क्रियाकलाप कौन-कौन से हैं क्या इनका संबंध आपकी परंपरा से है?)

हरेन एवं विनीता यह मानते हैं कि वे ग्रामीण एवं परंपरावादी लोग हैं जो अपने सभी कार्य परंपरा के अनुरूप करते हैं। चाहे वह कृषि कार्य हो या त्योहारों को मनाना। कैथरिन टुडू कहती हैं धार्मिक गतिविधियों में स्त्री की भागीदारी के निषेध को पारंपरिक मान्यता कहते हैं, तो कुछ लोग पारिवारिक पोशाक एवं भोजन पद्धति को स्थानिक मान्यता के रूप में देखते हैं। ज्यादातर लोग मानते हैं कि गोदना एक आवश्यक संकेत है जिससे उनमें पूर्वजों से शक्ति एवं संरक्षण प्राप्त होता है। यह दोनों ही वर्ग स्त्री पुरुष के लिए आवश्यक होता है।

बड़की एवं शिल्पा कहती है गांव में समुदाय की सार्थक भागीदारी को उसकी एकता का आधार मानते हैं, जहां वे साथ-साथ कई गतिविधियों का आयोजन जैसे मेला, पूजा आदि करते हैं। जादातर लोग मानते हैं कि हम का सामूहिक रूप कई काम जैसे; जन संस्कार, विवाह संस्कार एवं मृत्यु संस्कार आदि सभी ने एकजुट होकर कार्य करते हैं या हमें समाज की, सामुदायिक की आवश्यकता पड़ती है। अगान मरांडी का मानना है कि हमारे यहां न्यायिक एवं प्रशासनिक समस्याओं का समाधान भी जनतांत्रिक तरीके से सबकी उपस्थिति एवं सहमति से किया जाता है।

गांव के अधिकांश लोगों कहते हैं हमारा पारिवारिक स्वरूप संयुक्त है जिसमें कई सदस्य होते हैं जैसे माता-पिता, दादा-दादी, चाचा-चाची, भाई-बहन तथा बुआ आदि होते हैं। परिवार में सभी की भूमिका विशिष्ट होती है। वहीं एकल परिवार वाले घरों में माता-पिता एवं उनके बच्चे ही होते हैं। ये एक दूसरे पर कम निर्भर रहते हैं। ये भी पूर्वजों से जुड़े मान्यताओं का अनुपालन करता है जिसमें बुजुर्गों की नहीं है। रीना हांसदा का मानना है कि उसके मामा उसके लिए बहुत महत्वपूर्ण है जिसके साथ वह मेला देखने व पशु चराने एवं लकड़िया बिनने आदि के लिए जाते हैं। उसका परिवार आज भी संयुक्त परिवार है जिसमें कई लोग हैं तथा सभी का उसके जीवन में अलग-अलग एवं आवश्यक प्रभाव है अपने मां के समान निडर एवं संघर्षशील है ऐसा उसे सब लोग कहते हैं।

जागु मरांडी अपनी दिनचर्या के रूप में कृषि कर्म करते हैं जिसमें बैलों की भोजन की व्यवस्था तथा खेतों में काम करते हैं। राकेश मुर्मू सुबह से ही मजदूरी के लिए निकल जाते हैं जिसमें मिट्टी का काम, घर बनाना इटभीट में काम करना शामिल है। कुछ महिलाएं खेतों में उगाई गई सब्जियां को लेकर बाजारों में बेचने के लिए ले जाती हैं। हरेन

मुर्मु का कहना है कि यहां अलग उम्र के लोगों की अलग गतिविधियां हैं जिसे वह लगातार दोहराते हैं जैसे बच्चे खेल खेलते हैं जिसमें दौड़ना, पशु चारण, पेड़ पर चढ़ना, तैरना, शिकार खेलना, शहद एकत्रित करना, भार उठाना आदि वहीं महिलाएं शुद्धि कराना, भोजन बनाना, पत्ता की महुआ आदि एकत्रित गीत गायन एवं नृत्य कला करना लकड़ी और पानी लाना आदि कार्य करते हैं वहीं पुरुष हंडिया तथा महुआ दारू बनाना, वाद्य यंत्रों को बजाना, बैठक करना, धार्मिक कर्मकांड में सहभागी होना तथा इसके अलावा घरेलू उद्योग तथा काम करते हैं। यह सभी काम मैं बचपन से करते और देखते आया हूं जो हमारी परंपरा का हिस्सा है।

आयाम 5 : सांस्कृतिक समाजीकरण/संस्कृतिकरण

(प्रश्न 3.1.1 से 2 तक: आपके लिए विद्यालयी शिक्षा का क्या मतलब है? आपके समुदाय में प्रशिक्षण/कौशल/विद्या/मूल्य आदि से जुड़े क्रियाकलाप कौन-कौन से हैं तथा उनका आपके जीवन में क्या महत्व है? आपके समुदाय में सामाजिक शिक्षा (अनुशासन एवं लोकव्यवहार) की शिक्षा की क्या व्यवस्था है?)

अगान मरांडी मानते हैं उनके गांव में शिक्षा के साधनों का समुचित अभाव है। जिसके शिक्षा की विशेष व्यवस्था नहीं हो पाती है। कुछ लोग मानते हैं कि गांव में केवल 1 आंगनबाड़ी तथा 1 प्राथमिक स्कूल ही है जिससे बच्चों को आगे की पढ़ाई के लिए दूसरे गांव जैसे कालूबथान जाना पड़ता है। मनोज किस्कू का मानना है कि आज भी हमारे यहां शिक्षा की जागरूकता का अभाव है, साथ ही सरकारी योजनाओं के लाभ के लिए भी काफी संघर्ष करता पड़ता है। जिस कारण लोग शिक्षा के लक्ष्यों से दूर है। रीना हांसदा मानती है कि उसके गांव में पांचवी तक ही विद्यालय था जिसके बाद उसे पढ़ने के लिए बाहर भेजा ही नहीं गया, इसलिए आज भी वह केवल पांचवी पास है। वही जागु मरांडी का कहना है कि शिक्षा सभी के लिए समान नहीं है और उच्च शिक्षा तक किसी प्रकार पहुंचने पर भी उचित मूल्य एवं कौशल के लिए अलग से कोर्स करने की जरूरत पड़ती है जिससे भी शिक्षा में हमारी भागीदारी की स्थिति निम्न है।

हरेन मुर्मु कहते हैं हमारे गांव में अनेक प्रकार के कार्य किए जाते हैं जिसमें खेती, मजदूरी, व्यापार तथा घरेलू उद्यम के साथ पशुपालन आदि किया जाता है। अगान मरांडी का कहना है कि खेती हमारा प्रमुख काम है जिसके साथ व्यापार भी जुड़ा हुआ है। जो हम उठाते हैं उसे हम पास के बाजार में बेचते हैं और अपनी आवश्यकता के अनुसार धन का प्रयोग करते हैं। इस कार्य की शिक्षा या प्रशिक्षण हमें अपने परिवारों से प्राप्त हुआ है। हमारे ये पारंपरिक काम हैं। राकेश मुर्मु का कहना है कि वे मजदूरी हैं और विभिन्न प्रकार के कार्यों को करते हैं जिसमें मिट्टी खोदना, घर बनाने में लेवर तथा लकड़ी काटना आदि करते हैं जिसे हम बचपन से करते आ रहे हैं। हम अपने घरों को खुद बनाते हैं तथा इंधन के लिए लकड़ी काटना आदि एक कौशल हमें अपने पिता तथा उन्हें उनके पिता से मिला है। यहां अधिकांश लोग इस काम में अच्छे हैं। जादातर लोगों का मानना है कि हमारे समाज में जो-जो धार्मिक कार्य होते हैं उससे हम कई रूपों को सीखते हैं जैसे; पारंपरिक गीत गायन, नृत्य करना, आपसी व्यवहार सीखना (भाषा), वाद्ययंत्र बजाना साथ ही पूजाकर्म तथा जोग मांडी द्वारा जादूटोना आदि सीखना-सिखाना। अगान मरांडी मानते हैं कि उनकी पारंपरिक जीवन-शैली विविध प्रकार के कौशल विद्या तथा प्रशिक्षण सीखाती है जिसमें महुआ दारू बनाना और बेचना, हंडिया बनाना तथा सीक झाड़ू बनाना, पत्तल के दोने-थाली बनाना, खटिया बिनना, पशुपालन आदि सभी जीवन का हिस्सा है जो अब हमें बाजारों से भी जोड़ती है। जागु मरांडी का कहना है कि हमारे परिवार कि पीढ़ियों से झाड़ू-फूक का काम करते हैं जिसमें लोगों की बाधाएं दूर होती हैं। इसका प्रशिक्षण मुझे अपने दादा और पिता से मिला है। अध्यापक होने के बावजूद मैं ये नाम करता हूँ और अपने बेटे को भी सिखा दिया है जिससे समाज की समस्या दूर होती है और हमें अपने पूर्वजों से आशीर्वाद मिलता है।

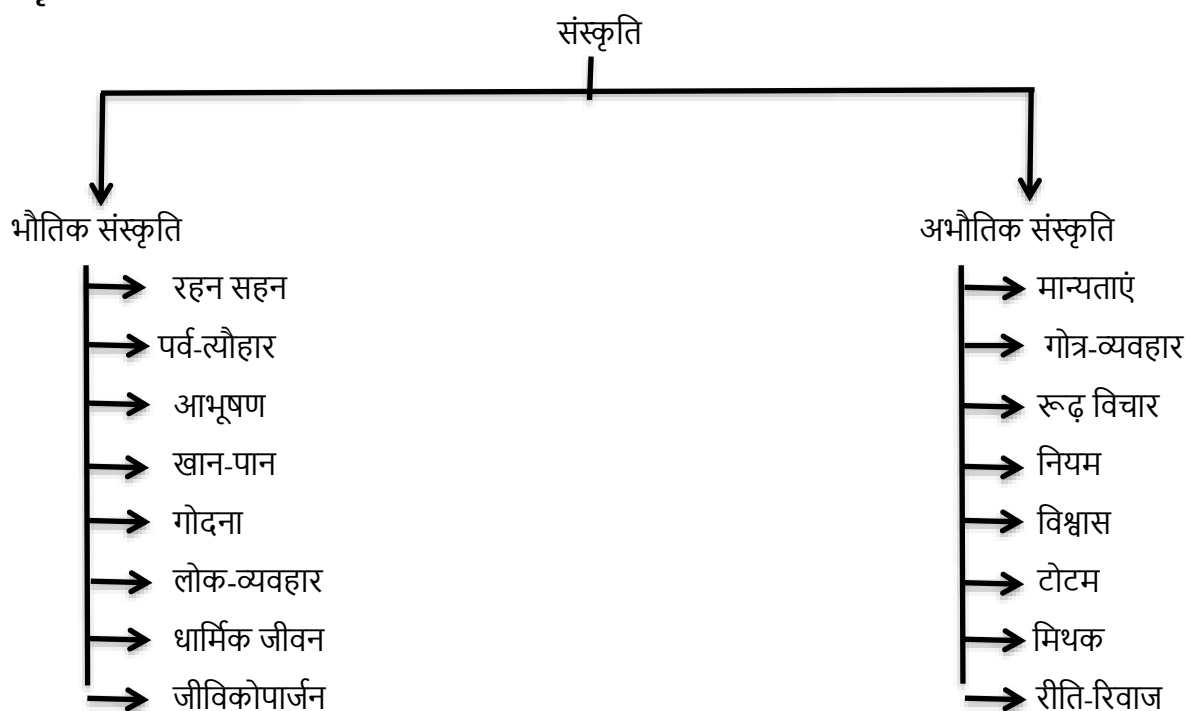
अगान मरांडी का कहना है गांव में सामाजिक शिक्षा की कोई अलग से व्यवस्था नहीं है परंतु हमारे यहाँ विटलाह जैसी व्यवस्था है जो निषिद्ध यौन संबंध और गैर समुदायिक संस्कृति का अनुसरण करने से बचाता है। कैथरिन टुडू मानती है कि हमारे समाज में गोत्रव्यवहार, विवाह, जन्म-मृत्यु तथा धार्मिक कार्यों के आयोजन हेतु नियमावली मौखिक रूप से है जिसका अनुपालन मांडी द्वारा कराया जाता है। हरेन मुर्मु यह मानते हैं अपनी समाज के बच्चों को भाषाई ज्ञान देने के लिए पहले परिवार में फिर समाज में व्यवस्था की जाती है। बड़की बेसरा का इस विषय में कहना है कि उसने अपने परिवार में परिजनों से शुरुआत में मातृभाषा ग्रहण किया तथा बाद में गांव के एक चाचा

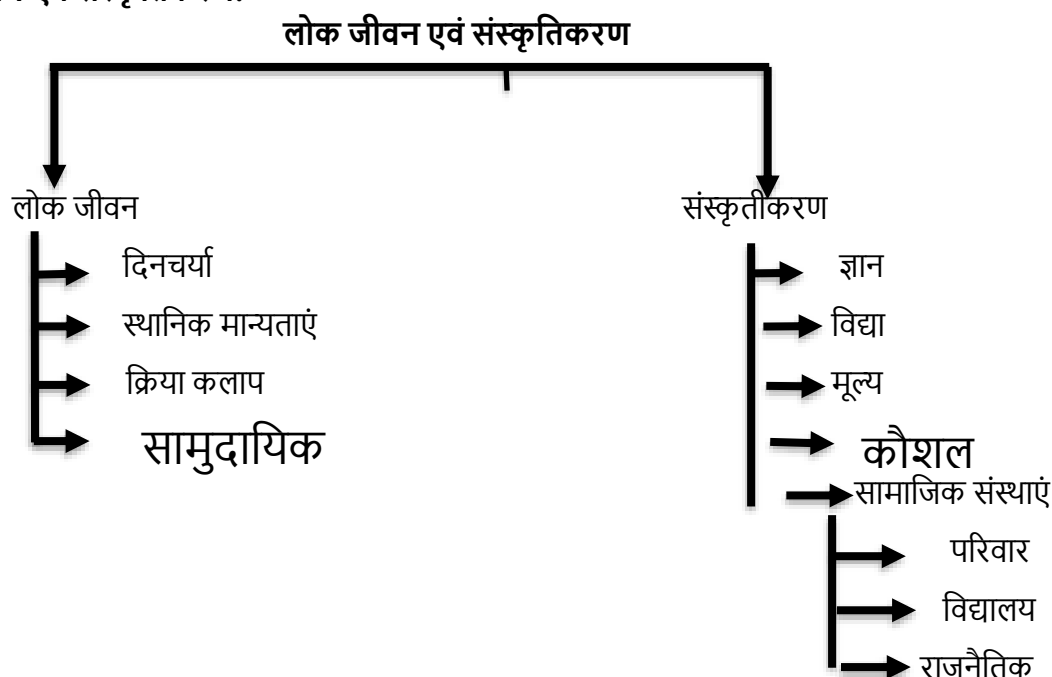
द्वारा शाम को विद्यालय चलाया जाता तथा जिसमें वो निःशुल्क संथाली भाषा सीखी हैं। आज भी ये विद्यालय गांव में चलता है जिसे कुछ भैया लोग मिलकर चलाते है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि किसी भी समारोह में पारम्परिक पहनावा, पारम्परिक नृत्य तथा गीत आदि की शिक्षा समुदाय के बड़े-बुजुर्गों की देख-रेख में होता है और सभी बचपन से ही इन कार्य में निपुण हो जाते है और प्रत्येक उत्सव, त्योहार-पर्व आदि में इसका अभ्यास एवं प्रदर्शन किया जाता है जिसका मूल्यांकन भी स्वयं एवं अन्य बुजुर्गों द्वारा किया जाता है। जागु मरांडी कहते है कि गांव की सारि मान्यताएं अब धीरे-धीरे खत्म हो रही है। अब सब अपने-अपने में व्यस्त रहते हैं और केवल पारण-भर ही में रीति-रिवाज, मान्यताएं, परंपराएं आदि बची है। शिल्पा सोरेन का कहना है कि हमारे समुदाय में इसका कोई निश्चित पैमाना नहीं है कि ऐसा ही होना चाहिए, परंतु फिर भी हम सब देखते आए हैं कि सारी आवश्यक क्षमताएं जैसे; पेड़ पर चढ़ना, तैरना, शहद इकट्ठा करना, खेती करना, जंगल से औषधिय पौधों को इकट्ठा करना, दौड़ना, भार उठाना आदि हमें बचपन से ही आ जाती है। जिसके लिए हमारी दिनचर्या ही मुख्य रूप से जिम्मेदार है, जो हमें प्रकृति के अनुकूल बनाता है और यही हमारी सामाजिक शिक्षा समझिए।

निर्वचन एवं व्याख्या :

संथाल भारतीय जनजातीय परिप्रेक्ष्य में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। इनकी जीवन संस्कृति आज भी कुछ परिवर्तनों के साथ पारंपरिक है जो इनके बासस्थान, वेश-भूषा, भोजन-पद्धति, सांस्कृतिक एवं धार्मिक पर्व-त्योहारों, आर्थिक क्रियाकलापों, राजनैतिक सरोकारों तथा शैक्षिक गतिविधियों द्वारा परिभाषित होती है। वर्तमान समय में जनजाति की इस विशिष्ट संस्कृति के संरक्षण एवं हस्तांतान की आवश्यकता के आलोक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 में कहा गया है कि "बच्चों में अपने सांस्कृतिक इतिहास, कला, भाषा एवं परंपरा की भावना और ज्ञान के विकास द्वारा ही एक सकारात्मक सांस्कृतिक पहचान और आत्मसम्मान बच्चों में निर्मित किया जा सकता है।" जनजातीय अस्मिता एवं गौरव के संरक्षण एवं संवर्धन की दृष्टि से वर्तमान समय में संथाल जनजाति के विविध पक्षों का अध्ययन किया जा रहा है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन एवं विश्लेषण के पश्चात संथाल जनजाति का सांस्कृतिक स्वरूप, लोकजीवन एवं सांस्कृतिक समाजीकरण को निम्न आयामों द्वारा समझा जा सकता है-

सांस्कृतिक स्वरूप:



लोकजीवन एवं संस्कृतिकरण:**सरोकार**

उक्त आयाम उत्तरदाताओं से साक्षात्कार और अवलोकन द्वारा प्राप्त संथाल जनजाति के सांस्कृतिक स्वरूप, लोकजीवन एवं संस्कृतिकरण की पारिभाषिक प्रक्रिया के खण्ड समुच्च है। संथाल जनजाति के संदर्भ में यह उनके अस्तित्व से जुड़ा है यह उनकी मान्यताओं एवं अवधारणाओं के सत्यापन एवं प्रत्यक्षण का आधार है। इस अध्ययन में संथाल जनजाति की पारंपरिक बसाहट को ग्राम स्वरूप एवं स्थानिकता तथा निवासस्थान एवं जीवन शैली के आयाम में विविध प्रश्नों द्वारा स्पष्ट किया गया है जिसमें पाया गया कि भुरसा गांव पूर्णरूप से संथाली मान्यताओं एवं संस्कारों से संस्कारित है यहां के घरों की पारंपरिक पुर्णतः पारंपरिक और पीढ़ियों से समान रूप से अपनाई गई जीवनचर्या से परिपूर्ण है। यहां स्थानिक मान्यताएं जैसे बिटलाह, गोदना आदि पूर्वसंदर्भों में अमूल्य परिवर्तन के साथ मौजूद है। सामाजिक मान्यताएं एवं भागिदारी के संदर्भ में पाया गया कि समस्त गांव सामूहिक रूप से त्यौहार, धार्मिक कर्म, न्यायिक एवं प्रशासनिक कार्यों के साथ-साथ सामुदायिक भाषा, लोक-व्यवहार आदि की समुचित व्यवस्था करता है जिससे अगली पीढ़ी संस्कारित होती है। इसी संदर्भ में कुमारी (2016) का कार्य विशिष्ट रूप से देखा जा सकता है जिसमें उन्होंने संथाल जनजाति की शैक्षिक प्रक्रिया में उसके समाज की भूमि को स्पष्ट किया है उन्होंने कहा है कि संथालों की एक प्रमुख संसाधन के रूप में उनका घर या निवासस्थान को देखा जा सकता है। यह अध्ययन इसी विचार से साम्यता रखता है किन्तु इसमें संथाल जनजाति की बसाहट के सभी पक्षों का विश्लेषण किया गया है जिसमें निवासस्थान, जीवनशैली, स्थानिक मान्यताएं, ग्राम स्वरूप तथा सामूहिक भागिदारी आदि का भी विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन में ग्राम का स्वरूप, उसकी भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक संसर्ग, गृह संरचना, सामुदायिक भागिदारी, जीवनशैली आदि का उदाहरण सहित चित्रण किया गया है।

किसी भी मानव समुदाय के लिए यह शब्द उनकी जीवंतता, उल्लास एवं आचरण पद्धति का सूचक है। यह संथालों के संदर्भ में शरीर-आत्म के सह-संबंधात्मकता को प्रदर्शित करता है। इस अध्ययन में संथाल जनजाति के सांस्कृतिक स्वरूप को जीवन संस्कार तथा पारंपरिक प्रथाएं एवं त्यौहार के आयाम में कई उपखण्डों जैसे- जन्म, विवाह, मृत्यु, धार्मिक रीतियां, पर्व-त्यौहार, सामाजिक गतिविधियों आदि द्वारा स्पष्ट किया गया है जिसमें पाया गया कि संथाल जनजाति के लोग उत्सवधर्मी एवं परंपरावादी होते हैं वे अपने सामर्थ्य अनुरूप अनुष्ठानों का आयोजन करते हैं जिसमें पारंपरिक भोजन, पोशाक, आभूषण एवं नृत्य एवं गोतो का गायन किया जाता है। संथाली लोग आस्तिक एवं कर्मकाण्ड को पूर्ण निष्ठा के साथ पालन करते हैं जिसमें परिवार के मुखिया एवं गाँव के मांझी की विशिष्ट भूमिका

होती है। अध्ययन में कई विशिष्ट सांस्कृतिक पद्धतियों का विश्लेषण किया गया है जिसमें विवाह के तरीके और प्रकारों का वर्णन तथा उसमें गोत्र व्यवहार की भी भूमिका हो स्पष्ट किया गया है। पाण्डेय (2002) ने भी इसी संदर्भ में अध्ययन किया जिसमें संधाल जनजाति की सांस्कृतिक सरोकारों का उनके राजनैतिक भागिदारी में प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होंने संधाल जनजाति की सांस्कृतिक विविधता का स्रोत उनके पूर्वजों की मान्यताओं और परंपरावादी दृष्टि को माना है। वहीं अरापन (2020) ने भी संधाल जनजा की सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन किया जिसमें संधाल जनजाति की मजबूत एवं अटल जीवन दृष्टि एवं करमठता को उनकी सांस्कृतिक विरासत का मूल तत्व माना। यह अध्ययन इन्हीं मान्यताओं को समेकित रूप में प्रस्तुत करती है साथ ही इस अध्ययन में जीवनसंस्कार, जीवनशैली, परंपराएं, मान्यताएं, धार्मिक प्रथाएं आदि की विवेचना विशिष्ट रूप में की गई है जिससे इन अध्ययनों की साम्यता के साथ-साथ संधालों के प्रति नवीन दृष्टिकोण को भी समझा जा सके।

निष्कर्ष :

संधाल एक शांत एवं कृषक जनजाति है जो मुख्यता स्थानिक मान्यताओं की दृढ़ता से अनुपालित करती है। भुरसा के संधाल जनजाति पारंपरिक एवं अत्यधिक परिश्रमी है जो अपनी विशिष्ट जीवनशैली अपने ग्राम तथा अपनी संस्कृति एवं अपने लोगों के साथ सोहार्दपूर्ण रहते हैं। संधाल जनजाति की पारंपरिक दिनचर्या जिसमें शुद्धि, लिपाई, भोजन, इंधन, शहद, महुआ, सीक आदि का एकत्रीकरण, मनोरंजन चबूतरा बैठक आदि का निष्ठापूर्वक पालन करते हैं वहीं अपने धार्मिक रीति-रिवाज, अपनी विविध एवं व्यापक त्योहारों एवं पर्वों को वर्षभर मनाना जिसमें पारंपरिक पोषाक, गीत नृत्य एवं संगीत आदि की प्रस्तुति, दृढ़ मान्यताएं जिसमें विटलाहा, गोदना, पूजाविधि एवं निशेधात्मक उपस्थिति, आचारणगत मान्यताएं आते हैं। सामाजिक अंतःक्रिया इस समुदाय की प्रमुख विशेषताओं में से एक है।

संधाल जनजाति अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक जीवन-शैली के लिए जानी जाती है। ये सांस्कृतिक अभिमूल्य इनके रहन-सहन, बोली-भाषा, गीत-त्योहार, मान्यताओं, शैक्षिक प्रक्रियाओं एवं सामुदायिक क्रियाकलापों की परंपरागत दृष्टि द्वारा विरचित है। इन्हीं सांस्कृतिक मान्यताओं से परिपूर्ण 714 से अधिक जनजातीय समुदायों में संधाल, भील और गोंड के बाद तीसरी सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति है जो अपनी प्राकृतिक प्रस्थिति से अनुकूलन व साहचर्य स्थापित करते हुए दैनिक आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति हेतु विविध कलाओं एवं तरीकों [यथा- कृषि के तौर तरीके, पत्तल की छतरी, दोना-प्लेट, ओखली, रस्सी की टोकरी, सिक झाड़ू, विभिन्न वाद्य यंत्र (ढोल-मांदर), तीर-धनुष आदि के साथ-साथ प्राकृतिक स्वरूप जैसे- जंगलों के नाम, झरना, नदी, पहाड़ तथा वन पशु-पक्षियों से जुड़े पारंपरिक गीत जो उनके पारंपरिक मान्यताओं के संदर्भ सूचक हैं] के खोजकर्ता के रूप में प्रतिस्थापित है। इन्हीं संधाली मान्यताओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित करने की शैक्षिक प्रक्रियाओं जो उनके जीवन मूल्यों एवं जीवन कौशल के निर्माण में सहायक है उनके संरक्षण एवं संवर्धन हेतु आज संघर्ष की स्थिति देखी जा सकती है। यह अध्ययन संधाल जनजाति की मान्यताओं एवं सांस्कृतिक आयामों को न केवल प्रस्तुत करता है अपितु इसमें संधाली भाषा, ज्ञान- प्रक्रिया, पारंपरिक एवं गैर-पारंपरिक, जीवनमूल्य, आर्थिक एवं सामाजिक संरचना का उनके व्यक्तिक बोध के साथ "विश्लेषण प्रस्तुत करती है। अगान मरांडी के कथनानुसार हमारा गाँव कई पीढ़ियों से ऐसा ही है मैंने अपने बचपन से देखा है हम ऐसे ही घरों में रहते हैं और हमारे घरों की संरचना भी पुराने लोगो की मान्यताओं के साथ हुई।" इसी प्रकार इस अध्ययन में उद्देश्य आधारित विश्लेषण द्वारा प्रश्नानुसार संधाल जनजाति की मान्यताओं, परंपराओं, जीवन दृष्टि तथा जीजिविषा पूर्ण दिनचर्या का उदाहरण आधारित सुक्ष्म एवं विषद विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है जिसमें आज के एक गांव भुरसा की संस्कृति, संस्कृतिकरण तथा वहां रह रहे संधाल जनजाति के जीवन को गहराई से समझा जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 प्रशिक्षण पुस्तिका 2020: यूनाइटेड नेशनल डेवलपमेंट प्रोग्राम, हिमाचल प्रदेश सरकार. <https://tribal.uic.in>

- अरापन (2020). झारखंड की संथाल जनजाति का सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास 1850 से 1950 ईस्वी तक एक ऐतिहासिक विश्लेषण. [डॉक्टरल थिसिस, पटना विश्वविद्यालय]. शोधगंगाइनफ्लिबनेट <http://hdl.handle.net/10603/447515>
- कुमारी, आर. (2016). संथाल: उनकी रचनात्मक उपलब्धि, आवश्यकता, आत्मधारणा तथा समस्याएं. [डॉक्टरल थिसिस, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय]. शोधगंगाइनफ्लिबनेट <http://hdl.handle.net/10603/306218>
- चौहान, के. एवं चौहान, आर. (2005). आदिवासी स्वर-4: सामाजिक आर्थिक जीवन. स्वर्ण जयंती पब्लिकेशन. (संपादित)
- ज्योत्सना (2005). संथाल जनजाति में राजनीतिक चेतना एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. [डॉक्टरल थिसिस, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ]. शोधगंगाइनफ्लिबनेट <http://hdl.handle.net/10603/288261>
- झारखंड जनजातीय विकास योजना <https://documents1.worldbank.org>
- झारखंड सरकार- कल्याण विभाग <https://www.jharkhand.gov.in>
- प्रशासकीय प्रतिवेदन वर्ष 2019-20 आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास विभाग, छत्तीसगढ़ शासन, आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (TRI), रायपुर. <http://tribal.cg.gov.in>
- पाण्डेय, पी. (2002). जनपद मालदा पश्चिम बंगाल के संथाल जनजाति का सामाजिक आर्थिक रूपांतरण. [डॉक्टरल थिसिस, वीबीएस पूर्वचल विश्वविद्यालय]. शोधगंगाइनफ्लिबनेट <http://hdl.handle.net/10603/200925>
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986). मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार (शिक्षा विभाग). नई दिल्ली. <https://www.education.gov.in>
- राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग पहली रिपोर्ट 2004-05 एवं 2005-0 भारत सरकार
- अनुसूचित जनजाति और अन्य परम्परागत वननिवासी (वन अधिकारों को मन्यता अधिनियम 2000) प्रशिक्षण पुस्तिका 2020, यूनाइटेड नेश्नल डेवलपमेंट प्रोग्राम, हिमाचल प्रदेश सरकार <https://ncst.nic.in>
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005. एनसीईआरटी. <https://ncert.nic.in>
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार. <https://www.education.gov.in>
- राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग <https://ncst.nic.in>
- वर्मा, यू.के. (2012). भारत का जनजातीय समाज. इंस्टिट्यूट फॉर सोशल डेवलपमेंट एंड रिसर्च. (संपादित)
- वर्मा, यू.के. (2015). संथाल, झारखंड सरकार कल्याण विभाग, झारखंड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान मोराबादी, रांची. <https://www.jharkhand.gov.in>
- शर्मा, ए. एवं अवस्थी, के.एस. (2016) भारत में अनुसूचित जनजाति की शिक्षा वर्तमान स्थिति और भावी आवश्यकताएं. भारतीय आधुनिक शिक्षा, (2). एनसीईआरटी <https://ncert.nic.in/journals-and-pericals.php?in=hi>